

sinnen: इति विरचितवाग्भिर्बन्धिपुत्रैः (*könnte einfach auch bedeuten diese Worte gesprochen habend*) RAGH. 8, 75. विरचितपदं गेयम् MEGH. 84, 101. MĀLAV. 77. एवं विरचितोक्तिं च धूर्ते KATHĀS. 24, 74. वचो विरचितम् 43, 206. तेन मया तस्योपरि वधेयाप्य एष विरचितः PANĀKAT. 86, 18. — 2) *anlegen, thun an, in:* कुशलविरचितानुकूलवेष RAGH. 8, 76. नवामेकामेकावलिमणि मणि लौं विरचये: Spr. 2792. मुक्ताजालं चिरविरचितम् MEGH. 94. कणासु विरचिता महामणाः BHĀG. P. 5, 24, 31. यस्मिन्विदं विरचितं व्योम्नीव जलदावलिः 9, 18, 49. शिरोविरचिताज्ञाति KATHĀS. 19, 87. — 3) *विरचित versehen mit (instr.)* MEGH. 19, 61.

रचन (von रच्): 1) n. *das Ordnen, Anordnen, Einrichten, Vorbereiten, Composition: मापा द्रव्यारैरवेषरचने* MBH. 30, 17. *कुर्वे पुस्तकवस्त्य रचनम् Verz. d. Oxf. H. 101, a, 9. अष्टपदोप्रबन्धः 129, b, 1. Gewöhnlich f. आ Ordnung, Anordnung, Einrichtung, Vorbereitung, Betreibung, Bewerkstelligung; Erzeugniss, Werk, eine literarische Composition: व्यूहस्य MBH. 8, 2132. व्यूहरचनां विधाय PANĀKAT. 9, 23. पथेयमावपेः शैलै संप्रामरचना कृता HARI. 3431. स्तोकाव्याकृत्तप्ररचना SĀH. D. 138. भूषाणामर्थरचना 149. नाभ्यस्ता कषायपत्ररचना so v. a. die Kleider sind noch nicht oft getragen worden MBH. 114, 5. संतिसा वस्तुरचना *eine gedrängte Anordnung* SĀH. D. 422. संगीतरचनायां कृतायाम् MĀLAV. 19, 1. विकृतदुर्गरचन adj. PANĀKAT. 148, 7. शराणां पत्नरचना *das Einsetzen der Federn in die Pfeile* HāB. 116. खुरुटिः *das Runzeln der Brauen* Spr. 732. MEGH. 51. इष्टार्थस्य Anordnung BHĀR. NĀTĀQ. 19, 48. DAÇAR. 1, 49. SĀH. D. 407. प्रगुणः DAÇAR. 1, 4. श्रव्यः das Betreiben seiner Sache, Verfolgung seines Ziels, Bemühung BHĀG. P. 3, 9, 10, 23, 8. मृत्युभवालुकारूपविधानः SĀH. D. 64, 11. श्राविर्भे समवसरपास्य रचनाम् so v. a. begannen das Werk ČATR. 1, 174. Verz. d. Oxf. H. 121, b, No. 214. भव्यानां प्रुभसिद्युपापरचनाचित्ता विघते विधिः so v. a. das Ausfindigmachen, Erdenken KATHĀS. 43, 256. अनिन्द्यपदप्रमाणावाक्यप्रपत्तिः Verz. d. Oxf. H. 187, b, 33. महती निवासरचना so v. a. ein grosses Gebäude MBH. 52, 4. पानभूमिरचनाः *künstlich hergestellte Trinkplätze* RAGH. 19, 11. प्रतिकृतिरचनाः Bildnisse 18, 52. अनेकविधिपदः PANĀKAT. 132, 24. कानकः Goldsachen KATHĀS. 46, 283. गीतिः Gesangstück RĀGA-TĀR. 8, 380. वचन० geschickte Reden, Beredtsamkeit PANĀKAT. 68, 5, 161, 2. भवड़ः खभारः Gegebilde Spr. 664. डैमिनिकोषसूत्रः Composition Verz. d. Oxf. H. 167, a, 33. अवधिदो रचनानुवादः Werk, That BHĀG. P. 3, 15, 23, 23, 26. अनङ्गः LA. 83, 4. सन्मङ्गलोपवाचाराणां सैवादिरचनाभवत् RAGH. 10, 78. रचनानिर्विशेषम् RĀGA-TĀR. 3, 95. सत्वररचनम् adv. schnell, eiligst GIT. 8, 14. रचनाः *künstliche Gebilde* ĠĀM. 1, 24. नातिलघुविपुलरचनामिः *eine literarische Composition* VARĀH. BHĀR. S. 1, 2. उदात्तरचनान्वित so v. a. Stil SĀH. D. 189, 5. Nach den Lexicographen ist रचना = परिस्पन्द AK. 2, 6, 2, 38. = प्रतिपत्र TRĪK. 2, 6, 41. = प्रन्थन, गुप्त u. s. w. H. 633. HALĀJ. 4, 45. = व्यूह H. 747. HALĀJ. 5, 9. = निवेश, स्थिति H. 1499. = पाश, भार, उच्छय, वृत्त, पत्त u. s. w. in comp. mit einem Worte, das Haupthaar bedeutet, H. 568. Vgl. कृष्णरचना (auch KATHĀS. 37, 115), कैशो (auch P. 2, 3, 44, Sch.), दत्तं, धूर्तं, पत्तं. — 2) f. आ personif. als Gattin T̄vashṭar's BHĀG. P. 6, 6, 42.*

रचयितर् (wie eben) nom. ag. *Verfasser: व्रस्य द्रृपकस्य* Verz. d. Oxf. H. 142, a, No. 290.

रचित 1) partic. adj. s. u. रच्. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104.

रचितव (von रचित) n. *das Versassetsein SARVADARÇANAS.* 129, 6.

रचितव्य HARI. 8234 fehlerhaft für रचितव्य, wie die neuere Ausg. liest. रच्, रच् a) रङ्गति, रङ्गते (रगे) DHĀTUP. 23, 30. P. 6, 4, 26. VOP. 8, 138. अनुरञ्जिति R. 7, 99, 11 aus metrischen Rücksichten. — b) रङ्गति, रङ्गते (रगे) DHĀTUP. 26, 38. P. 3, 1, 90. VOP. 24, 9. — रङ्गतुम् und रङ्गतम् VOP. 8, 138. erhält keinen Bindenvocal Kār. 2 aus SINDDH. K. zu P. 7, 2, 10. रङ्गा and रङ्गा P. 6, 4, 32. — 1) रङ्गति und °ते sich färben, sich röthen, roth sein: रङ्गति (und °ते) वस्त्रं स्वप्नेव P. 3, 1, 90, SCH. अरघ्नत एवा färbe sich AV. 15, 8, 1. अरघ्नत GīC. 9, 7. तवाधरो रङ्गति NAISH. 3, 120. रङ्गत् 7, 60, 22, 52, 55. नेत्रे स्वप्नं रङ्गतः UTTARAR. 102, 18 (138, 2). चनुषी तव रङ्गते Spr. 4036. — 2) रङ्गति und °ते in Aufregung gerathen. aus seiner Gemüthsruhe kommen, sich hinreissen lassen, entzückt sein von, seine Freude haben an (instr.) NAISH. 7, 60 (act.). कृतविद्यो ऽपि बलिना व्यक्तं रङ्गते Spr. 2961. बलप्राप्तेन शूराणाम् — अरघ्नत जनः सर्वः MBH. 4, 355. रङ्गते न कथापि: Spr. 3033. अन्योऽन्यमव रङ्गते सर्वे MBH. 14, 1059. यामिर्वियुक्ता रङ्गेये नाहमेकमणि ताणम् *froh werden*. — sein KATHĀS. 43, 358. वक्ति रङ्गदरङ्गदा कार्यकार्ये (acc. du.) मतो मनः 112, 88. GīC. 9, 7. Gewöhnlich mit einem loc. verbunden in der Bed. Gefallen finden an, sich hingezogen fühlen zu, sich verlieben in: रङ्गनीयेषु रङ्गति कोपनीयेषु कुप्यति NILAK. 16. अर्थकर्मणि रङ्गते Spr. 3723. को हि रङ्गेक्षसात्तरे KATHĀS. 18, 346. ताणतपिण्डिसापाये भोगे रङ्गति नोत्तमा: DRSHĀNTAÇ. 39 in HAEB. Anth. S. 222. न कामे ऽपि वेश्या रङ्गति कत्तुमाः 38, 39. आव्ये कल्पतराविव नित्यं रङ्गति जननिवद्याः Spr. 3239. सज्जाने रङ्गते जनः 1203, 701. तेषु रङ्गेयाः MBH. 12, 5908. एमे रङ्गत् (lies रङ्गतु) मे मनः Verz. d. Oxf. H. 166, b, 17. KATHĀS. 43, 165. तस्यामार्पत्रश्च रङ्गति 31, 83. संनिकृष्टे निकृष्टे च कष्टे रङ्गति कुत्रियः 64, 124. निर्गानानपि न देष्टि न रङ्गति गुणिष्ठपि SĀH. D. 111. स्त्रियो वा केषु रङ्गते विरचते च ताः पुनः MBH. 13, 2234. Spr. 967. — 3) रङ्गति = गतिकर्मन् NAIGH. 2, 14. — रङ्ग partic. s. bes.

— caus. 1) färben, röthen: इदं रङ्गति रङ्गति विलासं पलितं च पत् AV. 4, 23, 1. अरुं कंसस्य वासासि रङ्गापामि HARI. 4472. P. 6, 4, 24, Vārtt. 3, 1, 23, 1. अरुं कंसस्य वासासि रङ्गापामि HARI. 4472. P. 6, 4, 24, Vārtt. 3, 1, 23, 1. अरुं कंसस्य वासासि रङ्गापामिरीचिभिः KUMĀRAS. 6, 81, 7, 19. रङ्गनिदिशः MBH. 12, 9998. ad Čak. 78. GIT. 10, 6. BHĀG. P. 8, 8, 8. नृपस्तदर्सं महत्। तेजसा रङ्गापासं संधायमिव भास्करः MBH. 1, 6772. स्वतेजसा रङ्गतः जगत् so v. a. erhellit, erleuchtet 14, 1101. शेतात्पत्रशिष्यानपि रङ्गतः जगत् so v. a. erhellit, erleuchtet 14, 1101. शेतात्पत्रशिष्यानपि रङ्गापास्ते दिनकरः संधायागेषा रङ्गितः HARI. 4839. MBH. 8, 2170. को-धरोऽनित्योचन HARI. 13770. R. 6, 20, 28. द्वारो मणिमयाशैव तपनीयेन रङ्गिताः 93, 6. RAGH. 3, 64. VIKR. 60. VARĀH. BHĀR. S. 24, 14. Bāh. 12, 17. KATHĀS. 40, 3, 56, 322. PANĀKAT. 4, 1, 34. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 303, Cī. 18. वनं रोकेशकररङ्गितम् erleuchtet, erhellit BHĀG. P. 10, 29, 21. तेजसा चैव रङ्गितः R. 5, 87, 11. पथा कर्मफलैरेह्नी रङ्गितस्तमसा वृतः। विवरो वर्णमाणित्य देहेषु परिवर्तते MBH. 12, 9999. सुरङ्गित geschickt gefärbt